ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 66 अंक 2 अक्तूबर 2018 कार्तिक 2075 वार्षिक मूल्य 150 रु०

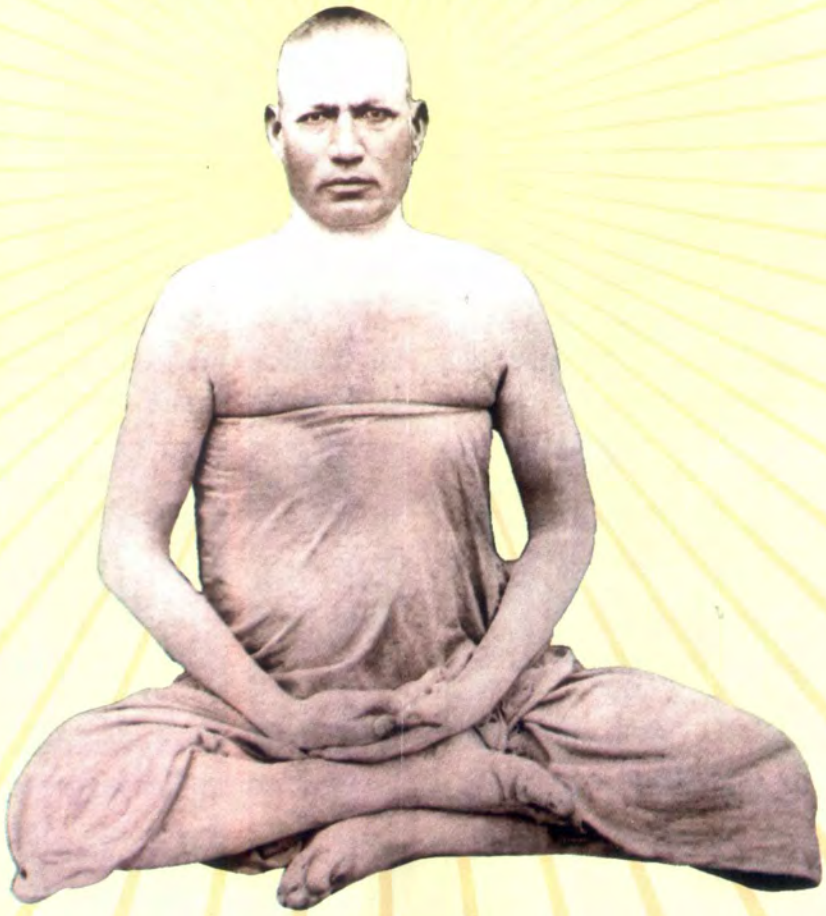

महर्षि दयानन्द सरस्वती

निधन - 30.10.1883 ई.

स्वयं बुझा दिवाली के दिन पर जग को ज्योतिर्मय कर गया

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

तृतीय आर्यवेदप्रचार यात्रा जिला जींद की चित्रावली

गांव सिवाहा

गांव कालवा

गांव खरक गागर

बाल विकास सी.सै. स्कूल धड़ौली (जीन्द)

गांव भूराण

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गांगोली (जीन्द)

भारत सीनियर सै. स्कूल, आसन

गांव कलावती

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :66 अंक : 2
अक्टूबर 2018 विक्रमाब्द 2075
दयानन्दाब्द 195 कलिसंवत् 5118
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,118

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय:	2
2.	आर्यसमाज का भविष्य	3
3.	महर्षि दयानन्द जी के पुण्य.....	6
4.	पञ्चतन्त्र में नारी का स्थान	8
5.	महर्षि दयानन्द सरस्वती की.....	13
6.	महान् दयानन्द	15
7.	सर्वोच्च न्यायलय का निर्णय....	16
8.	गोरक्षा आन्दोलन....	17
9.	जुकाम की उपचार विधि	19
10.	बाबाओं ने अच्छे संतों की	20
11.	अंग्रेजी घुसपैठिया....	21
12.	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन..	23
13.	तृतीय आर्यवेदप्रचार यात्रा सम्पन्न	24

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

दिवो नु मां बृहतो अन्तरिक्षात्,
अपां स्तोको अभ्यपप्तद् रसेन।
समिन्द्रियेण पयसाहमग्ने,
छन्दोभिर्यज्ञैः सुकृतां कृतेन।।

अथर्व० 6.124.1

विनय

हे महान् प्रभु! हम स्वल्प मनुष्य अपनी तुच्छ कामनाओं को यूं ही इतना भारी समझा करते हैं। हम मनुष्यों को जिस समय जो कामना होती है, उसे हम इतना अधिक महत्त्व देते हैं कि हम समझते हैं यदि हमारी वह इच्छा पूरी न हुई तो हम मर जायेंगे और यदि पूरी हो गई तो सदा के लिए निहाल हो जायेंगे– मानो फिर हमें कुछ कामना ही न रहेगी। परन्तु हम अपनी इच्छाओं को इतना महत्त्व इसलिये देते हैं क्योंकि हम तुम्हारे अनंत महत्त्व को अनुभव नहीं करते। हम यह अनुभव नहीं करते कि तुम तो जल के अपार समुद्र हो और हमारी प्रबल से प्रबल प्यास को (जिसके मारे हम मरे जाते हों) एक लुटिया भर पानी से बुझा सकते हो। नहीं, तुम तो कामनाओं के बरसानेवाले, सब तरफ फैले हुवे असीम अन्तरिक्ष हो, और तुम हमें अपनी इस अनन्त वृष्टि में से केवल एक बूंद ही देकर तृप्त कर सकते हो– छका सकते हो। तुम्हारे दिव्यज्ञानमय बृहत् आकाश से बरसनेवाले ज्ञान-बिन्दुओं में से एक बूंद में ही वह रस है, वह शक्ति है कि हम उस ज्ञानबिन्दु को ही पाकर परितृप्त हो जाते हैं। हे प्रभु! मुझे न जाने कितनी कामनायें थीं, मुझे अपने में न्यूनतायें ही न्यूनतायें दिखलायी देती थीं और मैं समझता था कि मेरी यह न्यूनतायें पूरा यत्न करते हुवे भी कई जन्मों में भी पूर्ण न होंगी। पर हे पिता! मैं क्या बताऊँ, तेरे ज्ञानप्रकाशमय दिव्य अन्तरिक्ष से मुझ पर तेरी एक ही बूँद गिरी, परन्तु उस में वह रस था कि उस तेरे शक्तिकण द्वारा मुझमें छन्दोबद्ध दिव्य-ज्ञान प्रकट होने लगा, मुझे यज्ञों का दर्शन होने लगा (अर्थात् मुझे किस समय किस प्रकार से आत्मत्यागमय शुभ कर्म करना चाहिये, यह भासित होने लगा) और पुण्यों द्वारा जिस सुख का अर्जन संसार करना चाहता है वह सुख भी मेरा साथी होगया। इतनी सब वस्तुयें मुझे इकट्ठी मिल गईं। लोगों को इस पर सहज ही विश्वास न होगा, पर यह सच है। सचमुच तेरे ज्ञान-भंडार का एक ज्ञानकण, तेरे बलराशि का एक अणु, इस तुच्छ मनुष्य को सर्वथा भरपूर कर देता है। मनुष्यों की जन्मजन्मान्तारों की भारी भारी कामनायें एक क्षण में तेरे एक स्वल्प दानबिन्दु द्वारा परिपूर्ण हो जाती हैं, केवल हम तेरी महिमा को नहीं पहिचानते।

शब्दार्थ

(दिवः) तेरे ज्ञानप्रकाशमय द्युलोक रूपी **(बृहतः अन्तरिज्ञात् नु)** महान् अन्तरिक्ष से ही **(अपां स्तोकः)** तेरे ज्ञान कर्म शक्तिरूप जलों का एक स्वल्पकण **(रसेन)** अपने तृप्तिदायक रस से युक्त **(मां अभि)** मुझ पर **(अपप्तत्)** गिरा; और **(अहं)** मैं **(अग्ने)** हे परमेश्वर! तेरे इस स्वल्प जलकण द्वारा **(इन्द्रियेण)** इन्द्रवीर्य– आत्मबल से **(पयसा)** पोषक ज्ञान से **(छन्दोभिः)** वेदमन्त्रों से **(यज्ञैः)** यज्ञों से, शुभकर्मों से और **(सुकृतां कृतेन)** पुण्य कर्मों के फल अर्थात् सुख से **(सं)** संयुक्त हो गया हूं।

सम्पादकीय

आर्यसमाज का भविष्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सन् 1875 में स्थापित आर्यसमाज एक ऐसी बुद्धिजीवी संस्था है जिसके मन्तव्य और सिद्धान्त संसार के अन्य सभी संगठनों से श्रेष्ठ और प्राणिमात्र के लिए हितकारक हैं। प्रत्येक कार्य बुद्धिपूर्वक सोचसमझकर करना इस समाज का वैशिष्ट्य है। इस संगठन में अविद्या, अज्ञान, अन्धकार, गुरुडम और अविवेकशीलता के लिए कोई स्थान नहीं है। अत्याचारी अंग्रेजों के चुंगल से भारत को स्वतन्त्र कराने में आर्यसमाज के वीरों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इनकी तपस्या, त्यागवृत्ति और बलिदान से प्राप्त स्वतन्त्रता का उपभोग पहले कांग्रेस पार्टी ने किया और अब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की राजनीतिक संस्था भारतीय जनता पार्टी देश के अधिकतर भाग पर शासन कर रही है। यदि स्वतन्त्रता प्राप्त करते ही आर्यसमाज अपने बलिदान का सही उपयोग करके राजनीति में भाग ले लेता तो आज देश के सम्मुख जो समस्यायें हैं, वे इतनी प्रबल नहीं होती, जितनी आज हैं। आज राजनीतिक पार्टियां जनता का मत प्राप्त करने के लिये उनकी अनुचित मांगें स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाती हैं। कहीं भाषा की समस्या है, कहीं मत-सम्प्रदाय की उलझन है, कहीं आतंकवाद की क्रूरता है, कहीं धनिकों का वर्चस्व है, कहीं जन्मना जाति के आधार पर अनावश्यक आरक्षण है तो कहीं किसान कष्ट को असह्य मानकर आत्महत्यायें कर रहे हैं, कहीं अनावश्यकता वाले निर्धनों की भी कोई पूछ नहीं हो रही, कहीं शत्रुदेश निरपराध जनता और सैनिकों की हत्या करने से नहीं चूकता, कहीं निरपराध पशु पक्षियों की निर्मम हत्या करके अपना उदरपोषण करने वालों की भरमार है, कहीं अपनी उचित-अनुचित मांगों की पूर्ति हेतु हड़तालें करके देश की सम्पत्ति को नष्ट कर रहे हैं, इत्यादि अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान वोट की राजनीति के कारण नहीं हो पा रहा।

यह आर्यसमाज की सर्वोपकारी मान्यताओं के अनुसार देश की राजनीति का संचालन हो तो भारत की आन्तरिक समस्यायें तो सुलझ ही जायेंगी, साथ ही शुभभाव रखने वाले पड़ोसी देश भी भारत की ओर आंख उठाकर भी नहीं देख सकेंगे।

दुर्भाग्य से आज आर्यसमाज जैसे पवित्र संगठन में भी पदलोलुपता के कारण धड़े बने हुए हैं, यदि ये एक हो जायें तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को भारी चिन्ता होने लग जायेगी। संघ कभी नहीं चाहेगा कि आर्यसमाज की फूट समाप्त होवे। अभी गत दिनों हरद्वार में गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन किया गया था, उसमें स्वामी रामदेव जी के सम्मुख आर्यसमाज के दोनों पक्षों ने उन पर भरोसा जताकर एकजुट होने का संकल्प लिया था। इसी के फलस्वरूप स्वामी अग्निवेश ने बिना शर्त के आत्मसमर्पण की भी घोषणा की थी। इसी निमित्त तथा झारखण्ड के शोषित समाज की

बात सुनने के लिए स्वामी अग्निवेश जी झारखण्ड जा रहे थे, परन्तु कुछ प्रछत्र लोगों ने स्वामी जी पर प्राणघातक हमला किया और उन्हें जान से मारने का प्रयत्न किया। यदि किसी व्यक्ति से विचारधारा नहीं मिलती हो तो उसके लिए वाद-विवाद का उचित मार्ग अपनाया जा सकता है, परन्तु एक वृद्ध संन्यासी के साथ मारपीट करने का असंवैधानिक उपाय किसी भी समस्या का समाधान नहीं होता। आक्रमणकारियों का एक उद्देश्य यह भी था कि यदि य स्वामी जीवित रहा तो आर्यसमाज में एकता का प्रयत्न करेगा जिससे हमारा उद्देश्य बाधित होगा।

झारखण्ड सरकार को इस की निष्पक्ष जांच कराकर दोषियों को दण्डित करना चाहिये। यदि ऐसा नहीं होता है तो यह आर्यसमाज के लिए भी कलंक की ही बात है, क्योंकि ये स्वामीजी भले ही संमलैंगिकता के समर्थन जैसे कई विवादास्पद बयान भी दे देते हों, परन्तु मूलरूप में तो आर्यसमाज से सम्बद्ध हैं। इनसे विचार भिन्नता होते हुए भी इस समय आर्यसमाज को एकजुटता दिखानी चाहिये। क्योंकि स्वामी अग्निवेश अन्य मत-पन्थों की अपेक्षा आर्यसमाज के अधिक निकट हैं तथा विश्व के अनेक देशों में आर्यसंन्यासी के रूप में जाने जाते हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी के अन्तिम दर्शन के लिए जा रहे स्वामी अग्निवेश के साथ हाथापाई की गई, इससे प्रतीत होता है कि दोनों घटनाओं में संघ और भाजपाइयों का ही हाथ है।

यदि इस समय एकता हेतु पग नहीं उठाया गया तो संघ आर्यसमाज की फूट का पूरा लाभ उठाता रहेगा और हमारी कमजोरियों का फायदा उठाकर शनैः शनैः बचे हुए आर्यसमाज मन्दिरों पर भी हावी हो जायेगा। प्रायः करके लोग स्वार्थी और दब्बू प्रवृत्ति के होते हैं, वे जानते हुए भी राज के विरुद्ध सत्य कहने का साहस नहीं जुटा पाते, इसी कारण अव्यवस्था फैलती चली जाती है।

अतः आर्यसमाज का भला इसी में है कि भविष्य में एकजुट रहें और संघ की आर्यसमाज के प्रति की जाने वाली सूक्ष्म गतिविधियों से सावधान रहें क्योंकि वेद का नाम तक ने लेने वाले, गीता भक्त, मूर्तिपूजा और नये-नये मन्दिरों के निर्माण को प्रश्रय देने वाले और मछली भक्षक स्वामी विवेकानन्द के शिष्यों का यह सम्प्रदाय आर्यसमाज के साथ कभी भी आत्मीयता से सम्बन्ध स्थापित करना नहीं चाहेगा, यह कटु सत्य है।

आर्यसमाज ने अपने संगठन को दृढ़ और विश्वव्यापी बनाने के लिए आर्यप्रादेशिक सभा, आर्यप्रतिनिध सभा जैसे प्रकल्पों का निर्माण किया हुआ है। इन सभाओं के अधिकारी त्यागी, तपस्वी, विद्वान्, संन्यासी, महात्मा आदि स्वार्थरहित व्यक्ति होते थे। परन्तु विगत 60 वर्षों से इस पुरानी परम्परा और व्यवस्था में परिवर्तन आने लग रहा है। धन के प्रभाव से ऐसे व्यक्ति सभाओं में प्रविष्ट होने लग गये जिनका ज्ञान, तप, स्वाध्याय, सेवा आदि वैदिक धर्म के प्रति नगण्य ही रहा है। ऐसे व्यक्ति पद प्राप्ति के लिए हीन से हीन उपायों को अपनाने में भी संकोच नहीं करते।

वेद का प्रचार वही व्यक्ति अधिक कर सकता है, जो विद्वान् होने के साथ-साथ गृहस्थधर्म के उत्तरदायित्व से मुक्त होगया हो अथवा वानप्रस्थ वा संन्यस्त हो। ब्रह्मचर्य अवस्था तो ज्ञान ग्रहण करने की ही होती है, उसे जगत् में प्रचार करने हेतु स्वयं को तैयार करना होता है। ऐसा व्यक्ति भी यदि इन्द्रियजयी हो तो वह भी ब्रह्मचारी रहता हुआ भी प्रचार कार्य भली भांति कर सकता है।

इसलिए आर्यसमाज की सभाओं का यह कर्त्तव्य बनता है कि पद-प्रतिष्ठा, वित्तैषणा और लोकेषणा का त्याग किये हुए योग्य व्यक्तियों को अधिकार प्रदान करें तथा प्रचार करने वाले सज्जनों को सुख सुविधा प्रदान करके उससे जनता में सद्धर्म का प्रचार करवाया जाये। यदि इस प्रकार की नीति से कार्य होगा तो आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

यदि यह नहीं होगा तो ईसाई, मुसलमान तथा विभिन्न प्रकार के मतमतान्तर अपना झूठा प्रचारतन्त्र फैलाने में पूर्णतया स्वतन्त्र होते जा रहे हैं। इनके पाखण्डयुक्त, भ्रामक तथा असत्य प्रचार को रोकने वाला केवलमात्र आर्यसमाज ही है। इस समाज के अतिरिक्त एकाध सम्प्रदाय में सत्यता और लोकोपकारक भावना अति सीमित है, वह भी गुरुडम क रूप लिये हुए है। उसमें प्राचीन भारतीय ऋषि-मुनियों और वेदादि के प्रति कोई आस्था नहीं है। शराब, मांस का त्याग कराना, गोसेवा करना आदि दो-तीन बातों के प्रचार तक ही एकाध सम्प्रदाय सीमित रह जाता है।

भारत की युवापीढी अंग्रेजियत की ओर अन्धाधुन्ध दौड़ लगा रही है। भारतीय संस्कृति का नाम लेकर शासन करने वाली भारतीय जनता पार्टी भी इस ओर ध्यान न देकर मन्दिर-मूर्ति निर्माण को ही प्राथमिकता दे रही है। असली मूर्तियां तो ये युवक ही हैं, इन्हें भारतीय संस्कृति के प्रति आस्थावान् बनाना चाहिये।

पत्थर की मूर्तियों पर चढाया गया धन तो पहले भी मुस्लिम आक्रान्ता लूटकर ले गये और अब जो चढावा चढाया जा रहा है, उसे भी भविष्य में विधर्मी लूट ही लेंगे। उस समय पत्थर की मूर्तियों की अपेक्षा वे वीर युवक ही रक्षा कर सकेंगे, जिन्हें देशभक्ति की शिक्षा देकर तैयार किया जायेगा और ऐसे वीर और देशभक्त युवक आज आर्यसमाज ही तैयार कर सकता है। हमें दूसरे संगठनों से भी यही आशा की जानी चाहिये कि वे भी देश की अस्मिता की रक्षार्थ अपना योगदान दे सकें।

25 से 28 अक्टूबर तक दिल्ली में मनाये जाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन के आयोजकों से भी मेरा नम्र निवेदन है कि वे भी इस समय हृदयनिहित वैर और पदलोलुपता को त्याग कर आर्यसमाज में फैली हुई इस फूट को दूर करने का पूरा प्रयास करें, अन्यथा सम्मेलन करना, मात्र धन संग्रह करके अपना वर्चस्व प्रदर्शित करना ही कहलायेगा। सम्मेलन की समाप्ति पर इसका परिणाम ही सिद्ध करेगा कि यह सम्मेलन सफल रहा अथवा मात्र दिखावा था।

- विरजानन्द देवकरणि

महर्षि दयानन्द जी के पुण्य संस्मरण

प्रस्तुति– आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत) दिल्ली सरकार

बाबू अमृतलाल बांकीपुर निवासी ने बताया कि एक बार हम बनारस जा रहे थे। हमने देखा कि स्वामी जी लंगोट बांधे सड़क से दाऊद नगर जा रहे हैं। वहां सड़क के ऊपर कीचड़ था तथा एक बैलगाडी उसमें फंस गई थी। स्वामी जी ने देखा कि गाडीवान बैलों को मार रहा है किन्तु गाडी फिर भी टस से मस नहीं होती। स्वामी जी ने गाडी के पास जाकर बैलों को गाडी से खोल दिया तथा गाडी को खेंचकर कीचड़ से बाहर निकाल दिया। हम लोग यह देखकर दंग रह गये।

जालन्धर में सरदार विक्रमसिहं ने स्वामी जी महाराज से कहा कि सुनते हैं कि ब्रह्मचर्य में अतुल शक्ति होती है। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि यह सत्य है तथा शास्त्रों में भी ऐसा ही लिखा है। सरदार जी बोले कि आप भी ब्रह्मचारी हैं, किन्तु आप में तो बल दिखाई नहीं देता। स्वामी जी उस समय तो मौन रहे, किन्तु एक दिन जब सरदार विक्रमसिंह अपनी दो घोड़ों की गाडी पर सवार हुए तो स्वामी जी ने चुपके से उसकी गाडी को पीछे से पकड़ लिया। कोचवान के चाबुक मारने पर भी जब घोड़े आगे नहीं बढे, तो सरदार जी ने पीछे मुड़कर देखा कि स्वामी जी ने पीछे से गाडी को पकड़ा हुआ है। तब स्वामी जी बोले– मैंने आपको ब्रह्मचर्य शक्ति दिखाई है।

कासगंज (एटा) में एक दिन गुलजारी लाल खत्री की वाटिका के सामने दो सांड परस्पर लड़ रहे थे। दोनों तरफ से मार्ग अवरुद्ध हो गया था। स्वामी जी कुछ विद्यार्थियों सहित उधर से जा रहे थे। उन्हें ज्ञात हुआ कि सांडों की यह लड़ाई दो घंटे से चल रही है। स्वामी जी उन सांडों के पास गये तथा उनका एक एक सींग पकड़ उन्हें ऐसा धक्का दिया कि दोनों का मुख आकाश की तरफ उठ गया तथा वे दोनों डरकर वहां से भाग गये।

स्वामी जी महाराज की मृत्यु से कुछ घंटे पूर्व, अजमेर के सिविल सर्जन डा० न्यूमेन ने जब आकर स्वामी जी को देखा तो आश्चर्य से कहने लगे कि रोगी अत्यन्त विशालकाय वीर तथा रोग को सहने वाला है। इसको देखने से ज्ञात होता है कि यद्यपि रोग असह्य है, किन्तु इसके चेहरे पर दु:ख का नामोनिशान भी नहीं है। यही है जो ऐसे उग्र रोग में भी अपने को संभाल रहा है तथा अभी तक जीवित है। इस पर डा० लक्ष्मणदास ने उनसे कहा– ''ये स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं, जिनका नाम आपने सुना भी होगा। यह सुनकर डा० न्यूमेन ने शोक प्रकट किया तथा स्वामी जी के धैर्य की प्रशंसा की।

गुजरान वाला में एक दिन व्याख्यान में स्वामी जी ने कहा– ''कि हरीसिंह नलवा बड़ा शूरवीर हुआ है। इसका कारण सम्भवत: यह प्रतीत होता है कि वह 25-26 वर्ष तक ब्रह्मचारी रहा था। मेरी आयु इस समय 51 वर्ष है तथा मुझे विश्वास है कि मेरा ब्रह्मचर्य भी अखण्डित है। जिसे अपने बल पर अभिमान हो, वह आगे आए, मैं उसका हाथ पकड़ता हूं तथा वह अपना हाथ छुड़वाले अथवा मैं अपना हाथ खड़ा करता हूं कोई नीचे करके दिखलाये। सभा में लगभग 500

व्यक्ति उपस्थित थे तथा उनमें कई कश्मीरी पहलवान भी थे। किन्तु आगे आने का साहस कोई न कर सका।

एक बार गुरु विरजानन्द जी ने क्रोधित होकर स्वामी दयानन्द जी को कुछ अपशब्द कहे तथा एक दंडा मारा। नैनसुख जडिया ने दण्डी जी से कहा कि दयानन्द हमारी तरह गृहस्थी नहीं है, साधु संन्यासी है, उसको न अपशब्द कहने चाहियें तथा न ही मारना चाहिये। विरजानन्द जी ने कहा कि हम भविष्य में प्रतिष्ठा से ही पढायेंगे। पाठ समाप्ति पर जब स्वामी दयानन्द मकान से बाहर आए तो नैनसुख जी पर कुद्ध हुए तथा कहा-कि तुमने मेरे लिये ऐसा अनुरोध क्यों किया? दण्डी जी सुधार की दृष्टि से मारते हैं, शत्रुता से नहीं। यह तो उनकी कृपा है। आपने गलत किया, जो उन्हें टोका।

विद्या समाप्ति के अनन्तर जब स्वामी जी गुरु विरजानन्द से विदा लेने को गये तो गुरु दक्षिणा के रूप में दण्डी जी की प्रिय वस्तु आधा सेर लोग दण्डी जी को भेंट किये। दण्डी जी ने स्वामी दयानन्द से कहा-''मैं तुम से कोई दक्षिणा नहीं चाहता। तुम प्रतिज्ञा करो कि आजीवन आर्यावर्त में आर्षग्रन्थों की महिमा स्थापित करोगे तथा अनार्षग्रन्थों का खण्डन करोगे।'' वैदिक धर्म की स्थापना में अपने प्राण अर्पण कर दोगे। दयानन्द ने इसके उत्तर में केवल एक शब्द कहा-''तथास्तु। ऐसा ही होगा।'' यह कहकर वे गुरु के चरणों में झुक गये तथा मथुरा से प्रस्थान किया।

एक व्यक्ति ने स्वामी जी को अपना हाथ दिखाया। स्वामी जी ने कहा- कि इसमें हाड है, चाम हैं और रुधिर है और कुछ नहीं है।

किशनसिंह ने स्वामी जी ने पूछा, आप शिवलिंग पूजा का निषेध करते हैं किन्तु इसका तो शास्त्रों में वर्णन है। स्वामी जी ने कहा-कैसी लज्जा की बात है कि तुम लोग लिंग की पूजा करते हो तथा जब लिंग पृथक् होकर यहां आगया तो क्या कैलाश का शिव नपुंसक नहीं हो गया होगा?

स्वामी जी जब किसी साधु के मस्तक पर ''श्री'' लिखा देखते थे, तो कहते थे मांगना भीख तथा लगाना ''श्री'' (लक्ष्मी)।

एक दिन एक ब्राह्मण के हाथ में फूल देखकर स्वामी जी ने पूछा कि क्या है? उसने कहा कि भैरों जी के लिये फूल-पत्र हैं। इस पर स्वामी जी बोले- वाह! आप खाओ खीर लड्डू तथा भैरों जी को खिलाओ फूल-पत्र।

स्वामी जी भस्म लगाने वाले साधुओं को कहते थे, यदि भस्म लगाने से मोक्ष होता है, तो गधा दिन रात भस्म में लेटता है, वह भी मुक्ति को प्राप्त होगा।

कानपुर में स्वामी जी जिस गंगाघाट पर ठहरे हुए थे वहां स्वामी कैलाश पर्वत को अपनी शंका निवृत्ति के लिये आमन्त्रित किया। स्वामी कैलाश पर्वत ने उत्तर में कहला भेजा- कि हम शूद्र के स्थान पर नहीं आते। यह घाट एक कायस्थ का था। स्वामी जी ने कहा म्लेच्छ के राज्य में क्यों रहते हो?

जब खण्डन मंडन के कारण लोग स्वामी जी को गालियां देते थे तब स्वामी जी कहते थे कि जिस प्रकार लोग ससुराल में गालियों से प्रसन्न होते हैं, वैसे ही मैं भी ईश्वरभक्ति का प्रचार करते हुए, धर्म विरोधियों की गालियों से प्रसन्न होता हूं।

एक बार मथुरा के एक चौबे से स्वामी जी ने कहा कि हमने सुना है तुम्हारी पत्नी बड़ी

सुन्दर तथा बड़ी चतुर है। इस पर उस चौबे को क्रोध आ गया। स्वामी जी बोले, तुम साधारण स्थिति के व्यक्ति होकर बुरा मानते हो, किन्तु कृष्ण जी को परस्त्रीगामी कहकर बदनाम करते हो। यदि वे जीवित होते तो तुम्हारे साथ क्या व्यवहार करते।

कुछ ब्राह्मण लोग शिवलिंग पर बेलपत्र चढाने जा रहे थे। स्वामी जी ने कहा– कि ऊँट को खिलाते तो उसका चारा बनता इनको पत्थर पर चढाने से क्या लाभ है।

स्वामी जी के उपदेश से एक सिपाही ने कानपुर में अपनी मूर्ति गंगा में फेंक दी तथा कण्ठा तोड़ डाला। उसने स्वामी जी से पूछा, यदि पाप हुआ तो? स्वामी जी हंसकर बोल– जो पाप होगा वह मुझे तथा जो पुण्य होगा वह तुझे मिलेगा।

एक बार एक नाई स्वामी जी के लिए रोटी लेकर आया। तथा स्वामी जी से प्रार्थना की कि आज तो आप मेरी भिक्षा ग्रहण कीजिये। महाराज ने उसे सहर्ष स्वीकार किया। तब उपस्थित लोगों ने कहा, महाराज यह तो नाई की रोटी है। स्वामी जी ने पूछा, रोटी गेंहू की है या नाई की? तथा रोटी प्रेम से खाई।

पं० गौरीशंकर महाराज के पास आए तथा बोले मैं ज्योतिषी हूं, कुछ प्राप्ति की इच्छा से आया हूं। महाराज ने कहा यदि आपके ज्योतिष ने आपको यह बतलाया कि आपको मुझ से प्राप्ति होगी तो मिथ्या है, क्योंकि मैं आपको कुछ न दूंगा और यदि बताया है कि प्राप्ति न होगी तो, आपने व्यर्थ ही कष्ट किया।

सम्पर्क सूत्र
111/19, आर्यनगर, झज्जर
मो० - 9996227377

पञ्चतन्त्र में नारी का स्थान

लेखिका– डॉ० सुषमा आर्या डी.लिट्
ग्राम– मुण्डेट (हरद्वार)

भारतीय साहित्य में कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं जो विश्व का ध्यान आज विज्ञान की चकाचौंध में भी आकृष्ट करते रहते हैं। समय का अनवरत चलने वाला चक्र उन्हें मिटाने में अशक्त रहता है। उन ग्रन्थों का विषयवस्तु, वर्णनशैली, भाषा और भावगाम्भीर्य आदि तो साहित्यशास्त्रियों की आलोचना का विषय बनकर अत्यन्त उच्चकोटि को प्राप्त होता ही है, इसके साथ-साथ तात्कालिक सामाजिक विचारधारा का दिग्दर्शन करा कर भी वे कृतियां समाजशास्त्र के अध्येताओं को चिन्तन के नये आयाम प्राप्त कराती हैं।

किसी भी समाज के विचार और व्यवहार उसके साहित्य में इतने घुल-मिल जाते हैं कि उन्हें उस प्रस्तुत विषय से पृथक् करके विश्लेषण करना स्वयं अपने आप में एक नया निर्माण और समालोचना का विषय बन जाता है। पुनरपि इसपक्ष पर चिन्तन करना नितान्त आवश्यक भी है, क्योंकि ऐसा किये बिना तत्कालीन समाज की स्थिति और विचारों के विषय में हमारा ज्ञान शून्य रह जाता है। पुरातत्त्व विज्ञान को छोड़कर साहित्य के अतिरिक्त उस प्राचीन समाज के विषय में ऐसा कोई प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष साक्ष्य हमारे पास नहीं है जिसके आधार पर हम उस समाज की स्थिति का सही वर्णन और दर्शन पा सकें। अत एव ऐसे साहित्य का अध्ययन और अनुशीलन उत्तरोत्तर अपेक्षित है और रहेगा।

इसी कारण संस्कृत साहित्य में अनेक

विषयों पर चिन्तकों के विचार मिलते हैं। आधुनिक समय के आलोचक संस्कृत साहित्य की मौलिकता एवं विषय प्रतिपादन की शैली में अस्पष्टता का आरोप लगाकर संदेहात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। इन तथाकथित अस्पष्टताओं और विसंगतियों के घेरे में प्राचीन भारतीय समाज की नारी का स्थान इतना उलझ गया है कि उसे सुलझाना मुझ जैसी **कन्या** के लिए एक नई उलझन को जन्म दे देना है।

अत्यन्त प्राचीन वैदिक साहित्य में जहां स्त्री और पुरुष को समान अधिकार प्राप्त हैं, वहां स्पष्ट रूप से आर्थिक समता दृष्टिपथ में नहीं आती। सारा नारी समाज पुरुषों के धन पर निर्भर रहता था। दायभाग में स्त्री पुरुष की असमानता तो निरुक्तकार यास्क मुनि ने भी प्रदर्शित की है। अतः प्रश्न होता है कि क्या वैदिक साहित्य की स्त्री को पूज्य और देवी के रूप में पुरुष ने भावनात्मक स्तर तक ही स्वीकार किया है अथवा यथार्थता से भी इसका कोई सम्बन्ध हो सकता है?

लौकिक संस्कृत साहित्य में भी अनेक प्रसंगों में स्त्री-पुरुषों के विभिन्न सम्बन्धों की चर्चा अनेक रूपों में और अनेक प्रकार से हुई है। उन चर्चाओं में नारी की स्थिति का अत्यन्त गरिमामय वर्णन कभी हमें गौरवान्वित करता है तो कभी हमारे अन्तस् को उद्वेलित करने वाले असम्माननीय विचारों से नारी जाति को प्रताड़ित भी किया गया है।

नीतिविषयक ग्रन्थों में शीर्षस्थ ''पञ्चतन्त्र'' से स्त्री जाति के विषय में अत्यन्त रोचक प्रसंगों के द्वारा तात्कालिक समाज की विचारधारा का स्पष्ट ज्ञान होता है।

पञ्चतन्त्र से मूढ़जन भी सरल भाषा एवं रोचक शैली में लोकव्यवहार के मर्म को समझकर व्यवहारकुशल हो जाते हैं। पशु पक्षियों को माध्यम बनाकर मानव समाज के कुछ अन्तरंग व्यवहारों का इतना सरल और सीधा वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। पंचतन्त्र के मित्रभेद प्रकरण में टिट्टिभ दम्पति कथा के द्वारा यह समझाया गया है कि पति-पत्नी के परस्पर विचार विनियम में उपयुक्त चिन्तन जिस पक्ष का भी हो, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए अन्यथा अत्यन्त श्रम से ही परिस्थिति सुधारी जा सकेगी। काकोलूकीय प्रकरण में कपोत दम्पति के रूप में गृहस्थ धर्म के साथ अतिथि धर्म के पालन और सतीप्रथा का भी उल्लेख है। लब्धप्रणाश प्रकरण नें (मकर) अपनी पत्नी की अदूरदर्शिता और असत्परामर्श से प्राप्त वस्तु को भी मूर्खतावश नष्ट कर देता है, यह दिखाया गया है। सिंहदम्पति कथा में सिंहनी के रूप में हमें मातृत्व, हृदय की दयालुता के दर्शन होते हैं। अपरीक्षितकारक की मन्थर कौलिक कथा में पुनः स्त्री के परामर्श से किये गये कार्य के दुष्परिणाम को दर्शाया गया है।

उपर्युक्त स्थूल विश्लेषण से ज्ञात होता है कि स्त्री और पुरुष के व्यवहारों में कहीं समता है, तो कहीं विषमता। एक ओर मूर्ख की सीमा में रखकर स्त्री के परमार्श को नकारना तथा दूसरी ओर गृहस्थ धर्म में स्त्री को विचारपूर्वक कार्य करने की प्रेरणादायिनी माना जाना क्या परस्पर विसंगति नहीं है? पञ्चतन्त्र में स्त्री जाति का वर्णन कन्या, भागिनी, पत्नी, माता आदि अनेक रूपों में हुआ है। इन्हीं को लक्ष्य में रखकर पञ्चतन्त्र के आधार पर कुछ विचार पाठकों की जानकारी के लिये यहां लिखे जा रहे हैं।

पञ्चतन्त्र ने कन्या के रूप में नारी को समाज के लिये एक समस्या और चिन्ता का कारण माना है। पुत्री उत्पन्न हो गई यह चिन्ता है; अब इसे विवाह के लिये किसको दिया जाये यह वितर्क है; दिये जाने पर यह सुख प्राप्त कर सकेगी वा नहीं, यह सन्देह पिता को कष्ट और कन्या में अन्तर नहीं करने देता अर्थात् कन्या और कष्ट पर्यायवाची मान लिये गये। नदी और नारी की समरूपता भी दिखाई गई है जैसे नदी जलवेग से कूल (किनारों) को तोड़ डालती है, उसी प्रकार स्त्रियां भी अपने दोषों से कुल के किनारों=मर्यादाओं को तोड़कर कुल को पतित कर देती हैं यहां जल और हृदय के आवेग को न रोक सकने के परिणामों का वर्णन किया गया है। कन्या अपने जन्म से माता के मन को हरण करती है, युवति होने पर सम्बन्धियों की चिन्ता का कारण बनती है, विवाह के पश्चात् भी यश को मलिन कर सकती है, यह आशंका और भय बना रहता है इस प्रकार विवाह के योग्य और विवाहित कन्याओं को विपत्तियों का समूह और कष्ट का प्रतीक ही नहीं माना जाता था, अपितु शत्रु को मारने के लिए इनका विवाह शत्रु के साथ भी कर देने का विधान मिलता है। स्त्री पाप करने पर भी अवध्या मानी गई है। हीन (कर्म) वा अधिकांगी कन्या को पिता और पति के लिए अशुभ भी माना गया है। पिता का कर्त्तव्य है कि घर में रहती हुई अविवाहित पुत्री का विवाह वह अवश्य करे, अन्यथा वह कन्या वृषली कहलाती है। स्त्रियों की पवित्रता देवताओं ने स्वत: ही कर रखी है। रजस्वला होने से पूर्व ही विवाह करने का उल्लेख बालविवाह की प्रथा का ज्ञान कराता है। विवाह मुख्य रूप से धन और कुल की समानता में करना चाहिए। किन्तु रज-स्वला होने पर यह बात गौण हो जाती थी। और यदि पिता रुष्ट हो जाये तो कन्या का विवाह कहीं भी किया जा सकता था। कन्या के विवाह में मुख्यत: सात बातों (कुल, शील, सनाथता, विद्या, धन, शरीर और आयु का ध्यान एवं परीक्षण कर लेने से निश्चिन्त रहा जा सकता है।

कन्या को जब समयानुसार पत्नी का स्वरूप मिल जाता है, तब उसके बिना घर की भी कल्पना नहीं है। भार्यारूप में अपने पति को सब कुछ मानकर उसकी पूजा न करे तो किसकी पूजा करे। स्त्री का स्त्रीत्व इसी में निहित है कि वह अपने पति को पूर्ण सन्तुष्ट रक्खे। पत्नी की सार्थकता पति को सुख देने तथा पुत्रवती होने में ही है। जिस पति की पत्नी मधुरभाषिणी नहीं है, वह घर जंगल के समान है तथा इस प्रकार के घर से सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिए। सम्भवत: ऐसी बुरी स्थितियों में उस समय सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) भी हो जाया करता होगा। दूसरी ओर पत्नी की रक्षार्थ पति द्वारा प्राणार्पण करने से स्वर्गप्राप्ति का उल्लेख है। अपनी रक्षा के लिये भी पत्नी की रक्षा अनिवार्य है। वीर पुरुषों को ही स्त्रियां प्रेम करती हैं।

दुश्चरित्रा और कलहप्रिया पत्नी को साक्षात् वृद्धावस्था के कष्टों से उपमित किया है। वृद्धावस्था में विवाह करने से पत्नी सेवा का सुख अनुपलब्ध रहता है। पत्नी के आगे अपने कष्ट की चर्चा करने ने सुख की अनुभूति होती है। किन्तु कुछ बातों को पत्नी से छुपाने का भी संकेत मिलता

है। जहां स्त्री को अवध्या कहा गया है, वहां कुलटा स्त्री को कठोर दण्ड देने का भी उल्लेख है। इसी दण्ड विधान प्रसंग में कुलटा स्त्री के नियम धर्मों का भी विचित्र उल्लेख है। उस समय वेश्यायें भी होती थीं। वेश्यायें कुलीन कुलवधुओं से सर्वदा स्वाभाविक ईर्ष्या रखती हैं। भागवत के मतानुसार जिस घर में स्त्री का शासन होता है, वह घर अवश्य विनाश को प्राप्त होता है। जहां स्त्री को वस्त्राच्छादन, भोजन, अलंकार और स्नेह आदि देने का विधान है, वहीं उससे गूढ़ मन्त्रणा करने का निषेध भी किया है। उस समय विधवायें भी थीं और उनका जीवन अत्यन्त कष्टयुक्त था। सम्भवत: इसी कारण सती प्रथा को बढावा मिला होगा।

माता के रूप में स्त्री सर्वत्र सम्मान को प्राप्त हुई है। सिंह के साथ शृगालपुत्र का पालन करती हुई सिंहनी का रूप यथार्थ में वात्सल्ययुक्ता मातृहृदया स्त्री का ही तो रूप है। जब माता का इतना महत्त्व है तभी तो मातृविहीन घर को अरण्य के समान कहा गया है। जिस पुत्र में माता के समान गुण विद्यमान हों, उसे ''जात'' पुत्र की संज्ञा से अभिहित किया जाता था। इसी से शिशु पुत्र भी अपनी माता को अनेक स्त्रियों के मध्य में पहचान लेता है।

सामान्य रूप से जहां स्त्रियों के गुणों का वर्णन हुआ है वहीं उनके स्वाभाविक दोषों और क्रियाकलापों को अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा गया है। कहीं-कहीं तो पञ्चतन्त्रकार के कथन से यह आभास होने लगता है कि संसार के सभी दुर्गुणों की खान जैसे स्त्री ही हो। लगता है इस नीतिकार को भी भर्तृहरि की भांति किसी ललना से विशेष लगाव रहा होगा और वह किसी कारणवश अधूरा रह गया अथवा एक दूसरे पर अविश्वास के कारण स्नेह सम्बन्ध विद्वेष में बदल गया होगा। तभी तो स्त्री के संसर्गसे पुरुष में होने वाले परिवर्तनों का भी उल्लेख है। जैसे पुरुष जब तक एकान्त में स्त्री के वचन नहीं सुन लेता, तभी तक वह प्रसन्न और गुरुजनों से प्रेम रखता है और तभी तक वह अपने कार्य भी स्वतन्त्रता से करता है।

पुरुष स्त्री की प्रार्थना से उचित-अनुचित कुछ भी कर सकता है। जैसे अग्नि की चमक से आकृष्ट होकर पतंगे उसी अग्नि में जलकर नष्ट हो जाते हैं उसी प्रकार कौन पुरुष ऐसा है जो स्त्रियों के मिथ्याप्रेम में पड़ कर नष्ट नहीं हो जाता। और कौन ऐसा पुरुष है जो स्त्रियों के दर्शन और संग से चलायमान नहीं होता। तथा किस पुरुष को स्त्रियों के विषयस्मरण पीड़ित नहीं करते। अत्यन्त बलवान् पुरुष भी स्त्रियों के सम्मुख भीरु (आज्ञापालक सेवक) की भांति हो जाता है। इसलिये यह भी कह दिया गया है कि जो पुरुष ललनाओं के वश में होकर जीवित रहता है, उसका जीवन, जीवन नहीं है। इसलिये पुरुषों को स्त्रियों का परित्याग श्मशानघाट अथवा श्मशान में पड़े घड़े की भांति कर देना चाहिये।

हम कुमारी कन्याओं और इससे अगली कोटि स्त्रियों में सहस्त्रों दुर्गुण देखनेवाले पुरुष समाज में कितनी न्यूनतायें हैं, यह स्वयं पञ्चतन्त्रकार के शब्दों में पढ़ सकते हैं। अपनी कमियों को पुरुषवर्ग नारी के मत्थे मढकर गर्व अनुभव करता है। संसार में दृष्टिपात करने से दिखाई पड़ता है कि किसी भी वग विशेष को गुणों या दुर्गाणों से

सर्वथा मुक्त नहीं कहा जा सकता। पुरुष हो वा स्त्री, गुण दोष न्यूनाधिक मात्रा में सभी में मिल जाते हैं। पुनरपि पञ्चतन्त्र में नारी के दुर्गुणों को विशेष जोर देकर गाया गया है। यथा:-

स्त्रियां झूठी, मायावी, साहसी, मूर्ख, लोभी, निर्दयी और अपवित्र दोषों से युक्त होती हैं। पुरुषों को ये मोह, अभिमान, लाचारी, रमण और भर्त्सना आदि से अपने वश में रखती हैं, अपने कटाक्षों से सरल हृदय पुरुषों के भीतर घुस कर ये कौन-सा दुष्कर्म नहीं करा देतीं। स्त्रियां प्राय: हठी होती हैं। और दुर्जनों का अनुसरण भी करती हैं। शम्बर, नमुचि और कुम्भीनस राक्षासें से भी अधिक मायावी होती हैं। समुद्र की तरंगों के समान स्त्रियां चंचल होती हैं। वे भीतर से कुछ और बाहर से कुछ, वाणी में कुछ और तथा व्यवहार में कुछ और ही होती हैं। ये दण्ड, शस्त्र, दान और प्रशंसा से भी वश में नहीं आतीं। स्वार्थ में रत स्त्रियों को पुत्र और पति से कुछ लेना देना नहीं होता। वे अपने पुत्र का भी वध कर सकती हैं। वश में आये हुए पुरुष को मछली मारने वाले के सदृश ही समाप्त कर देती हैं।

स्त्रियों पर जब विश्वास नहीं किया जाता हो, तब उनके सतीत्व पर तो विश्वास किया ही नहीं जा सकता। इसी प्रकार पञ्चतन्त्र में उक्त वर्णन से अतिरिक्त पचासों स्थानों पर स्त्रियों की भरपेट निन्दा की गई है। इसके साथ-साथ द्रोपदी की प्रशंसा भी की है।

स्त्री के विभिन्न स्वरूपों के इस दिग्दर्शन में विषमता तो है, किन्तु वह पुरुष और स्त्री की समरूपता में किस सीमा तक बाधक वा साधक हो सकती है, यह पाठकवृन्द के लिये विचारणीय ह। इसमें तात्कालिक समाज का विचारात्मक स्वरूप भी हमारे सामने आया है। किसी देश, जाति, स्थान और राज्यविशेष का वर्णन न होने से क्रियात्मक रूप आ भी नहीं सकता। कन्या से लेकर पत्नी, स्त्री ओर माता के स्तर तक पहुंचते हुये अनेक समस्याओं और समाज के अनेक आयामों में से हमें गुजरना होता है। पुनरपि स्त्रीमात्र को दृष्टिगत रखकर इसे निन्दा का पात्र इतना अधिक बना दिया गया है कि पञ्चतन्त्रकार को स्वयं भी यह कहना पड़ा कि स्त्री विष है वा अमृत?

आवर्त: संशयानामविनयभवनं पत्तनं साहसानां दोषाणां सन्निधानं कपटशतगृहं क्षेत्रमप्रत्ययानाम्।
दुर्ग्राह्यं यन्महद्भिर्नरवरवृषभै: सर्वमायाकरण्डं स्त्रीयन्त्रं केन लोके विषममृतयुतं धर्मनाशाय सृष्टम्।। 1।।
नामृतं न विषं किञ्चिदेकां मुक्त्वा नितम्बिनीम्। यस्या: सङ्गेन जीव्येत म्रियेत च वियोगत: ।।2।।

इस सब विवेचन से प्रश्न उठता है कि क्या स्त्रियां वास्तव में ऐसी ही होती हैं? मैं अपनी सामान्य बुद्धि से इसका उत्तर यदि दूं तो कह सकती हूं कि उक्त कथनों में पर्याप्त सत्यता है। मैंने अपने विद्यार्जनकाल में ऐसी बहुत-सी कन्याओं और स्त्रियों के दर्शन किये हैं, जिनमें पञ्चतन्त्रकार द्वारा वर्णित गुण दोष अक्षरश: घटते हैं। किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि सभी गुण दोष सभी में मान लिये जायें। दैवी गुणों से युक्त ऐसी सदयहृदया अध्यापिकाओं से भी मैंने जीवन में उच्चशिक्षादायक ज्ञानोपार्जन किया है। किन्तु सभी को एक मापदण्ड से नहीं मापा जा सकता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की विश्व को देन

30 अक्टूबर 1883 को महर्षि दयानन्द सरस्वती का निधन हुआ था। उन्होंने अपने 59 वर्ष के जीवन काल में यत्र-तत्र भ्रमण करके अनेक विद्वानों के पास रहकर शिक्षा पाई, देश में फैले हुए अविद्यान्धकार और पाखण्ड को साक्षात् देखा जनता की पीड़ा को अनुभव किया, देश को उन्नति पथ पर कैसे ले जाया जाये इसका भी विश्लेषण किया तथा सत्यासत्य के निर्णय की कसौटी प्राप्त की। उन्होंने आर्यजाति को भूला बिसरा जो ज्ञान पुनः प्राप्त कराया, उसका अति संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1. वेद अपौरुषेय हैं, इनमें सभी सत्य विद्यायें हैं।

2. वेद में मूर्ति आदि जड़पूजा का विधान नहीं है। मूर्तिपूजा से देश पराधीन हुआ है।

3. ईश्वर एक है, उसका मुख्य नाम ओम् है, अन्य नाम उसके गुण कर्म स्वभावानुसार है।

4. ईश्वर कभी मनुष्यादि के रूप में अवतार नहीं लेता, वह सर्वव्यापक है।

5. ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीनों पदार्थ अनादि हैं।

6. ईश्वर पापों को क्षमा नहीं करता, अपितु जीव के कर्मानुसार यथायोग्य फल देता है।

7. मृतकों के लिए किया गया श्राद्ध अवैदिक है।

8. जीवित माता-पिता-गुरु आदि की यथेष्ट सेवा करना सच्चा श्राद्ध है।

9. बालविवाह करना अधर्म है, युवावस्था में गुण कर्म स्वाभावानुसार विवाह करना श्रेष्ठ है।

10. विधवा को पुनर्विवाह की स्वीकृति होनी चाहिये।

11. पांच महायज्ञ करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

12. सतीप्रथा अवैदिक हे।

13. यज्ञ में पशु की बलि देना पाप है।

14. अनाथ और अछूतों का उद्धार करना चाहिये।

15. मनुष्यमात्र को वेद पढने सुनने का अधिकार हे।

16. वेदों में किसी व्यक्ति या स्थान विशेष का इतिहास नहीं है।

17. मद्य-मांस तथा सभी प्रकार के नशे करना पाप है।

18. जादू-टोने, भूत-प्रेत, ग्रहनक्षत्र द्वारा पीडा होना, हस्तरेखा से कर्मफल मानना आदि पाखण्ड है।

19. गाय, बकरी आदि सभी पशु तथा मुर्गे, मछली आदि प्राणियों की हत्या नहीं करनी चाहिये।

20. पुराण, बाइबिल, कुरान आदि अनार्ष ग्रन्थ जीवन को अन्धकार की ओर ले जाते हैं।

21. वेद से अतिरिक्त अन्य मत-मतान्तर व्यक्ति को सच्चाई से दूर ले जाने वाले हैं।

22. आर्षग्रन्थों का पठन-पाठन तथा तदनुसार आचरण करना चाहिये।

23. योगाभ्यास के द्वारा मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, किसी गुरु का नाम लेकर पापों से छुटकारा नहीं मिलता।

24. जो व्यक्ति आर्यमत को छोड़ दे, उसे शुद्ध करके पुनः आर्य बना लेना चाहिये।

25. अपने देश में अन्य देशीय राजा नहीं होना चाहिये।

26. सृष्टि प्रवाह से अनादि है, इसे ईश्वर ही बनाता बिगाड़ता है, यह स्वाभाविक रूप से स्वयं नहीं बनती-बिगड़ती।

27. ईश्वर और जीव पृथक्-पृथक् हैं।

28. मुक्ति में जीव ईश्वर में लीन नहीं होता।

29. शरीर त्याग के पश्चात् जीव दूसरा शरीर धारण कर लेता है।

30. मानव जीवन की उन्नति हेतु सोलह संस्कार करने आवश्यक हैं।

31. लुप्तप्राय पुराने वैदिक ग्रन्थों को ढूंढकर प्रकाश में लाना चाहिये।

32. ब्राह्मण ग्रन्थ ईश्वर द्वारा रचित नहीं हैं।

33. वेदाध्ययन से पूर्व आर्ष व्याकरण, वेदांग, उपांग और आर्ष उपनिषदों का पढना आवश्यक है।

34. अपने देश की उन्नति हेतु कला-कौशल सीखने आवश्यक हैं।

35. योग के नाम पर पाखण्ड करना अनुचित है।

36. बहुविवाह नहीं करना चाहिये तथा अपनी पत्नी से भी सन्तान प्राप्ति हेतु ही सम्पर्क करना उचित है।

37. वेश्यागमन आदि निन्दनीय कर्म है।

38. पुलिस में सच्चे धर्मात्मा पुरुषों को नियुक्त करना चाहिये।

39. न्यायाधीश पक्षपातरहित होकर न्याय करें।

40. जो जितना अधिक ज्ञानवान् होकर अपराध करे उसे उतना ही अधिक दण्ड देना योग्य है।

41. मुखपर पट्टी बांधने से जीवों का न मरना मानना अज्ञान है।

42. शुद्ध सात्त्विक अन्न का सेवन करें।

43. किसी का झूठा न खायें और न अपनी जूठन किसी को दें।

44. लड़के-लड़कियों की पाठशाला दूर-दूर होनी चाहियें।

45. जहां तक सम्भव हो पूर्ण विद्वान् और वैराग्यवान् व्यक्ति ही संन्यास दीक्षा ले।

46. राजा का मूर्ख और अनाचारी होना देश के लिए घातक है।

47. प्रजा को भी शिक्षित होना चाहिये।

48. वेदविरोधी और नामधारी गुरुओं के झांसे में न आयें।

49. संस्कृत भाषा का प्रचार-प्रसार अवश्य करें।

50. आर्यसमाज से बढकर देशोन्नति करने में अन्य कोई पन्थ या मतमतान्तर नहीं है।

एक ऋषि द्वारा उपर्युक्त प्रकार का ज्ञान देना अन्य ऋषियों से उच्च सिद्ध करता है। ऐसा और कोई ऋषि, मुनि, आचार्य, गुरु, उपदेशक ऐसा आज तक नहीं हुआ है, जो उपर्युक्त सभी बातों का एक साथ ज्ञान देकर जनता का कल्याण करने वाला हुआ हो।

ऋषि दयानन्द के बलिदान दिवस पर उनकी कुछ बातें जनता के लाभार्थ लिखी गई हैं।

-विरजानन्द दैवकरणि

महान् दयानन्द

ऋषि दयानन्द मेरे महान।
तेरे जागरण शंख स्वर से गुँजित भारत का आसमान।।

काशी की गलियाँ उठी हिमगिरि की गूँजी गुहा गहन।
कलकत्ता पूना पेशावर उत्तराखण्ड गूँजा दक्खन।
मृतप्राय जाति ने फिर पाया तुमसे नवजीवन नवल प्राण।।

चित्तौड़ उदयपुर जाग उठा सोया सब राजस्थान जगा।
हरियाणे के युग युग सोए योधेयों का जयगान जगा।
चिर सुप्त पंचनद की भूपर लवपुर में गूँजा सामगान।।

पश्चिम में मुम्बापुरी जगी नव प्रकटित आर्यसमाज जगा।
आर्यों की जड़ता दूर भगी सोया भारत का भाग जगा।
उत्तर दक्षिण पूरव पश्चिम में फैली वेद विभा समान।

तेरे प्रकाश से लेखराम गुरुदत्त लाजपत वीर बने।
बिस्मिल श्रद्धानन्द आदिक ने जीवन बलिदान किये अपने।
पतितों का शुद्धि प्रवर्त्तन से भूले भटकों का किया त्राण।।

हैदराबाद का धर्मयुद्ध जय किया तेरे दीवानों ने।
खुशहालचन्द शारदा वेदव्रत से धुरेन्द्र मस्तानों ने।
नारायण स्वामी ने हो निर्भय फहराया नभ में जय निशान।।

जीवन प्रदीप निर्वाण हुआ पर उससे अगणित दीप जले।
वृन्दावन हरिद्वार मथुरा काशी ज्वालापुर में मचले।
चमूपति का जीवन धन्य धन्य है हँसराज का आत्मदान।।

पाखण्डों के दुर्गम दुर्गों पर निर्भय तुमने कर प्रहार।
सब ध्वस्त किये गुरुडम के गढ़ खोले नवयुग के रुद्ध-द्वार।
अधिकार सभी को वेदों के पढ़ने का तुमने दे समान।।

अज्ञान अविद्या अन्धकार दम्भ के सघन घन ध्वस्त किए।
पाखण्ड खण्डिनी फहराई आसुरी हौंसले पस्त किए।
डूबती भँवर में पार लगा दी राष्ट्र नाव तूने सुजान।।

(श्री गजानन्द आर्य अभिनन्दन ग्रन्थ से)

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय: वैदिक विचारधारा का घातक

वेद, मनुस्मृति, ब्राह्मणग्रन्थ, उपनिषद्, रामायण, महाभारत तथा ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ ब्रह्मचर्य के महत्त्व से ओत प्रोत हैं। चारों आश्रमों का मूल ब्रह्मचर्य आश्रम है। इसके सिद्ध होने पर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश होता है, जिससे सन्तानोत्पत्ति होकर सृष्टि का क्रम यथावत् चलता है। इसके विपरीत समलैंगिक पुरुषों और स्त्रियों को परस्पर विवाह अथवा कामपूर्ति हेतु शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना नितान्त अप्राकृतिक और दुराचार को बढावा देना है। समान लिंग वाले दो पुरुष परस्पर मैथुन करते हैं तो इससे सन्तानोत्पत्ति कभी सम्भव नहीं है। यह अप्राकृतिक मैथुन परम्परा तो पशु पक्षियों में भी नहीं है। मानव स्वयं को समझदार मानता है, पुनरपि अप्राकृतिक दुराचार करने की स्वीकृति चाहता है। सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसे अप्राकृतिक दुराचार को स्वीकृति देकर भारतीय संस्कृति, सभ्यता और वैदिक मान्यता पर कुठाराघात किया है। यह अत्यन्त निन्दनीय कार्य है। अंग्रेजों ने भी जिस कर्म को घृणित समझा था, इसीलिये उसे गैर कानूनी सिद्ध कर दिया था। परन्तु हमारे भारतीय न्यायाधीश भारतीय संस्कृति को ही दूषित करने पर उतारू हो रहे हैं। यदि इन न्यायाधीशों की सन्तान भी समलैंगिकता दुराचार की छूट मिलने से इस कर्म को करने लगे तो ये न्यायाधीश अपने-अपने पुत्र तथा अपनी-अपनी पुत्रियों को इस कार्य हेतु प्रोत्साहित करेंगे अथवा उन्हें रोकेंगे।

प्रतीत होता है ये न्यायाधीश घृणित पाश्चात्य प्रणाली से प्रभावित हैं, इसीलिये भारत के सदाचार को दूषित करने में कोई बुराई नहीं मानते। इन लोगों को भारतीय संस्कृति की सही जानकारी प्राप्त करनी चाहिये।

आधुनिक युग के भविष्यद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती समलैंगिकता के विरुद्ध लिखते हैं-

..... वेश्यागमन जो करते हैं सो तो बुरा ही काम करते हैं, परन्तु बालकों से भी बुरा काम करते हैं, यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं, इनकी तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये.....ऐसे कर्मों से कुलों का नाश हो जाता है।.....जो लौंडे बाजी करते हैं वे तो सूवर वा कौवे की नाईं हैं, क्योंकि जैसे सूवर वा कौवे विष्ठा से बड़ी प्रीति रखते हैं और अरुचि कभी नहीं करते, वैसे वे भी पुरुषविष्ठा जिस मार्ग से निकलती है उस मार्ग में बड़ी प्रीति रखते हैं, इससे इस प्रकार के जो मनुष्य हैं वे मूर्ख से बढकर हैं कि वीर्य जो सब बीजों से उत्तम बीज है, उसको व्यर्थ नष्ट करते हैं और केवल पाप ही करते हैं- (सत्यार्थप्रकाश चतुर्थसमुल्लास, प्रथम संस्करण)

कुरान में मोती जेसे रंग के लड़कों से भी बहिश्त में स्त्रीवत् व्यवहार करने के लेख पर महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लास में 162 वीं आयत के उत्तर में लिखते हैं-क्योंकि

जी मोती के वर्ण के लड़के किसलिये वहां रक्खे जाते हैं.....क्या आश्चर्य है कि जो यह महाबुराकर्म लड़कों के साथ दुष्ट जन करते हैं, उसका मूल यही कुरान का वचन हो। समीक्षा 41- परन्तु जो यह स्त्रियों को खेती के तुल्य लिखना और जैसा जिस ओर से चाहो- उनसे ..... यह विषयी और ..... मैथुन का भी कारण हो सकता है।

इस प्रकार सिद्ध है कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समलैंगिक मैथुन को स्वीकृति देना कितना बड़ा महापाप है। इसकी आड़ में भारत की युवापीढी निर्वीर्य नपुंसक और कामी बन जायेगी। उसका पाप सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को लगेगा। भारत की वर्तमान और भावी सन्तति को पाप के गर्त में डालने वाले इस आदेश को तुरन्त वापिस लिया जाना चाहिये, अन्यथा भारत को नरककुण्ड बनने से कोई रोक नहीं सकेगा। भगवान् इन न्यायाधीशों को सद्बुद्धि दे जिससे ये अपने अनुचित निर्णय के विषय में पुनर्विचार करके उसे निषिद्ध कर सकें।

-विरजानन्द दैवकरणि

गोरक्षा आन्दोलन की स्मृति में

सेवा में श्री सम्पादक विरजानन्द दैवकरणि सादर नमस्ते:। सुधारक के अंक 3 नवम्बर 2017 पृष्ट 9 पर ''गोरक्षा आन्दोलन के 51 वर्ष'' लेख पढ़ा, जिस से इस आन्दोलन की बातें मुझे स्मरण हो आई। जो आप तक भेजना उपयुक्त समझता हूँ।

स्वामी ओ३मानन्द जी 5 नवम्बर 1966 का जो 900 सत्यग्राहियों का जत्था लेकर दिल्ली गये थे उसमें मैं भी शामिल था-उस समय मैं फौज से सेवानिवृत्त होकर कृषि कार्य करता था। जब स्वामी जी ने सन् 1957 में हिन्दी रक्षा आन्दोलन किया था तब मैं फौज में कार्यरत था, इस कारण मैं भाग न ले सका था। यह मुझे पश्चात्ताप था। जब हमें गोरक्षा आन्दोलन करने की सूचना मिली तो मैंने इसमें शामिल होने का मन बनाया। उस समय गेहूं की बिजाई का कार्य चल रहा था उसे शीघ्रता से पूर्ण करने का प्रयत्न किया और 4 नवम्बर शाम को रोहतक दयानन्द मठ में पहुँच गया। ग्राम कलहावड़ निवासी डॉ० रघुबीरसिंह हमारे गांव में डाक्टरी की दुकान चलाता था। वह भी मेरे साथ गया था।

चार तारीख की शाम को स्वामी जी की अगुवाई में दयानन्द मठ से शहर में जुलूस निकाला, नारे लगाते हुए भिवानी स्टेंड पर दुर्गा भवन पर पहुँचे। वहां पर विद्वानों के प्रवचन हुए। एक पौराणिक पंजाबी सज्जन ने कटाक्ष किया कि इन गोरक्षकों में से कितनों ने गऊपाल रखी हैं, स्वामी जी ने उसे लताड़ते हुए कहा कि ये सब किसान हैं इनमें से अधिकतर के पास गायें हैं और बैल तो सभी के पास हैं फिर रात को सभी दयानन्द मठ

पर जाकर सोये। स्वामी जी ने रेल में रिजरवेशन करा रखी थी। रेल के द्वारा देहली पहुंच गये। स्टेशन से पैदल जुलूस के रूप में जाकर गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा की कोठी पर जाकर गिरफतारी दी। हमें वहां से गिरफतार कर के तिहाड़ जेल भेज दिया गया।

7 नवम्बर को संसद भवन पर गोली चल गई और अनेक व्यक्ति मारे गये। बहुतों को गिरफतार किया गया। जेलों में स्थान नहीं रहा तो पुलिस ने हमें इस दृष्टि से शाम को जेल से जबरन बाहर निकाल दिया कि ये अपने घरों को चले जायेंगे और आज गिरफतार हुओं को जेल में रख सकेंगे। परन्तु हम लोग अपने घरों को नहीं गये। गोली काण्ड के कारण सब बाजार व होटल बन्ध होगये थे। भोजन का कोई प्रबन्ध न हो सका। आर्यसमाज करोलबाग वाले हमारे लिये कहीं से गुड़ और भूगड़े लाये।

हम खाकर सो गये। सवेरे उठे तो आर्यसमाज मन्दिर को चारों तरफ से घेर रखा था। पुलिस को पता चल गया था, एक जत्था इस मन्दिर में ठहरा है। पुलिस अधिकारियों ने स्वामी जी से बात करी और कहा हम आप को गिरफतार करेंगे। स्वामी जी ने कहा हम तो गिरफतारी देने के लिये ही आये हैं हमें तो शाम को जबरन जेल से निकाला था। पुलिस ने बसों में बैठाकर तिहाड़ जेल में ही भेज दिया। वहां पर हमें 21 दिन की सजा सुनाई गई।

मुझे तो खेती का कार्य सम्भालना था घर चला गया। किन्तु डॉ० रघुबीर ने कहा कि मैं तो फिर प्रदर्शन करूंगा। और वह वहीं पर कुछ लोगों के साथ बार बार प्रदर्शन करता रहा। पुलिस ने तंग आकर उस पर लाठी चार्ज कर दिया और उसके हाथ पांव तोड़ शरीर को जीवन भर के लिये बेकार कर दिया। डॉ० रघुबीर ने गोरक्षा के लिये अपने गृहाश्रम को बरबाद कर दिया, दुकानदारी खतम हो गई। दु:ख से कहना पड़ता है कि आर्यसमाज ने उसकी कोई सुध नहीं ली। फिर मैंने सुना था कि घर पर रहते हुये ही वानप्रस्थी के समान कपड़े रंग कर अपना समय व्यतीत कर रहा था। अब मुझे नहीं पता वह जीवित है या चल बसा। मुझे उसके बारे में अधिक पता नहीं है आप से प्रार्थना है कि कलहावड़ गाम में जाकर उसकी पूरी जानकारी प्राप्त करके सुधारक में प्रकाशित करें जिसने गोरक्षा के लिये अपने जीवन को अर्पण कर दिया, ऐसी त्यागी पर ध्यान देकर उस... [illegible] लेनी चाहिये।

उस समय के राजनैतिक वातावरण को देखते हुए मेरी धारणा है कि स्वामी ओ३मानन्द व प्रोफेसर शेरसिंह जी ही हरियाणा के निर्माण कर्ता थे, मुख्य थे, उन ही की देन है हरियाणा प्रान्त। शेष तो उनके सहायक थे। मैं अनेक आर्यसमाज के आन्दोलनों, प्रदर्शनों में भाग लेता रहा हूँ। आचार्य बलदेव के प्रदर्शनों में रोहतक में गौ रक्षा के लिये भाग लिया था। अब तो आयु 86 वर्ष हो गई, स्वास्थ्य ठीक न होने से भाग नहीं ले सकता आप का आज्ञाकारी लालचन्द्र आर्य मदाना खुर्द, झज्जर।

जुकाम की उपचार विधि

जुकाम– ये सारे शरीर का रोग है, वैसे साधारण बोल चाल में गला–भारी होना–नाक–आँखों से पतला या गाढ़ा तरल निकलना छींके आना–शिर भारी होना आदि लक्षण हैं। बार–बार होता है तब नजला या पीनस कहते हैं।

कारण– मुख्य हैं– पेट खराब रहना, कब्ज–गैस–गला खराब होना–टॉसिल बढ़ना, नाक में संक्रमण, प्रदूषण से एलर्जी, तेज गन्ध से, खून के दूषित होने से ठण्ड लगना बहना मात्र है। लेखक को कई सालों अति ठण्डे स्थानों में रहना पड़ा वर्ष में एक बार भी जुकाम नहीं होता था। कई दूसरे भी ठीक रहते थे। ये प्रकृति की तरफ से शरीर को साफ रखने का अपना ही ढंग है।

उपाय व साधारण उपचार– सभी रोगों से प्रथम है बचाव–परहेज–रोगरोधक ताकत और सही निदान तथा चिकित्सा। नाक–गले–हवा में हमेशा बहुत से रोगों के रोगाणु रहते हैं। इन के बढ़ने की खुराक प्रदूषित शरीर में रहती है। हम ने अपना रहन–सहन–खान–पान स्वयं बिगाड़ा हुआ है। जीभ के स्वाद के कारण–आलस्य से और पूरी सफाई ना रखने से हम रोगी होते हैं। सब तरह का प्रदूषण रोगों का कारण है, चाहे मानसिक भी हो। हम सब मिलकर इसे घटायें। प्रात: साफ हवा का सेवन करें, प्राणायाम या गहरे लम्बे श्वास तथा आसन करें। देह में बना कचरा रोज अंगों से बाहर निकले, सुपाच्य भोजन लें, नशों से बचें। जुकाम 4 से 7 दिन में ठीक हो जाता है। बार–बार होने वाले जुकाम के कारण को पहचान कर दूर करें। भारी खाना ना लें, बिना भूख केवल गर्म जल या सब्जियों का सूप लें। ढंग से 1–2 दिन का उपवास लाभकारी है। नीचे लिखे में से एक–दो विधि अपना लें शीघ्र लाभ होगा।

* कब्ज हो तो पालक= 500 ग्राम शलजम पते समेत या मूली–प्याज–गाजर– 250 ग्राम टमाटर– 100 ग्राम धनियां पत्ती= 60 ग्राम अदरक– 10 ग्राम साफ करके काट कर 1 लिटर जल में पकायें या इन में जो मिले लेकर ही पकाएं। छान कर मामुली नमक–भूना जीरा डाल कर रखें। हर तीन घण्टे पर 500 ML पीते रहें। बच्चों को कम मात्रा दें।

* तुलसी– 4 पत्ते काली मीत्र या सौंठ का काढा बना कर सेवन करें।

* छानस (चौकर) अजवाण चुटकी भर चुटकी भर नमक बना कर पीयें दो दिन लें।

* खजूर–मुनक्का लें।

* मुलहेटी का प्रयोग करें।

* गुड़ की लप्सी या बेसन का हलवा हल्दी डालकर लें। भूख हो गर्म जलेबीयां लें।

* गर्म पानी नमक के गरारे करें।

* भफारे लें ठण्डे जल से मुख धो कर लें। औषधियां:– 1. हरिद्रा खण्ड, बनफसा आदि काढ़ा, 2. कण्टकारी अक्लेह, 3. अमृतधारा सूंघें– शिघ्र गला नाक खुलेंगे।

सम्पर्क सूत्र:– देवीसिंह आयु० चिकित्सक
मो०– 9996316318, सैक्टर– 2, म० न० 1221
स्थाई पता– बुआना लाखू (पानीपत)

बाबाओं ने अच्छे संतों की भद्द कर दी

इन तथाकथित बाबाओं ने, अच्छे संतों की भद्द कर दी।
एषणाओं में संलिप्त हो, सब मर्यादाओं की हद कर दी।।

एक समय था बाबा जी, सत्य उपदेश दिया करते
वन कंदराओं और घासफूस की कुटियों में रहा करते
यम नियम का पालन कर संयम में जीया करते
वांछा तृष्णा सब तजकर भक्ति में रत रहा करते
संकट कष्ट सहा करते सब, चाहे गर्मी हो या सर दी।1।इन तथाकथित.....

मोह माया और ममता से वे दूर रहा करते
पाप कर्म और पाखंडों से परहेज किया करते
त्याग दिया सो त्याग दिया, नहीं पश्चाताप किया करते
अवसर मिलने पर भी नहीं कभी नीयत से डिगा करते
पर आज के बाबाओं ने झोली पापकर्म से अपनी भरदी।2।इन तथाकथित.....

एक स्थान पर नहीं रहकर, भ्रमण वे किया करते,
मठ और डेरे नहीं बनाकर विचरण सदा किया करते
फाकाकशी व रुग्ण होने पर, नहीं प्रण से हटा करते
सब दुनियादारी लाग लपेट से वे दूर रहा करते
पाजीपन और दुष्टकर्मों से, बाबाओं ने अपनी इज्जत खाक कर दी।3।इन तथाकथित.....

अब तो बाबा बड़े बड़े भव्य भवनों में रहते हैं
ढ़ोंग और स्वांग रचाकर खुद को ईश्वर कहते हैं
गुरुडम और नामचर्चा से जनता की बुद्धि हरते हैं
ऐयाशी का जीवन जीते, नहीं वे ईश्वर से डरते हैं
निकृष्टता और कामाग्नि संलिप्तता की सब सीमा पार कर दी।4।इन तथाकथित.....

ऐशो आराम का सामान जुटा जीवन का आनन्द लेते हैं,
भूमिगत कुटियाओं में स्त्रियों को माफी देते हैं,
दुराचार और पापकर्म की सीमा लांघ देते हैं,
शरण में जो आ जाता उसे वे फाँस लेते हैं,
नये नये दुष्कर्म उजागर होते फेहरिस्त लम्बी इन्होंने कर दी।5।इन तथाकथित.....

बाबा बनने से पहले इन्हें वेदाध्ययन करना चाहिए,
यम निमय अष्टांग निभाकर आत्मचिन्तन करना चाहिए,
इच्छा तृष्णा और पापाचार से सदा दूर रहना चाहिए,
पापों का दण्ड अवश्य मिलेगा ईश्वर से उन्हें डरना चाहिए,
ऋषि दयानन्द से तुम लो प्रेरणा जिसने मानवता हित जान फना कर दी।6।इन तथाकथित.....

देशराजआर्य
पूर्व प्रधानाचार्य
725 सैक्टर-4 रेवाड़ी 9416337609

अंग्रेजी घुसपैठिया 'दैनिक भास्कर'

देश के प्रमुख दैनिक हिन्दी समाचार पत्र राष्ट्रभाषा हिन्दी को विकृत करते जा रहे हैं। इनकी शब्दावली में अंग्रेजी शब्दों की भरमार रहती है। 'दैनिक भास्कर' ने तो राष्ट्रभाषा को नष्ट-नष्ट करने की शपथ ही ले रखी है। इसके अनेक वाक्यों में तो क्रिया को छोड़कर सभी शब्द अंग्रेजी के ही होते हैं। देखिए कुछ वाक्य राष्ट्रभाषा की छाती में छुरे के समान घुसकर हिन्दी की हत्या कर रहे हैं- हैंडमेड ग्रीटिंग और स्पेशल फूड बनाकर स्टूडेंट कहेंगे- 'हैप्पी टीचर्स डे।' 'माइंड गेम में लगाई ट्रिक्स, ललिता ने जीता प्राइज़'। 'कष्टमाइज़ डेनिज ड्रेसेज का बढ़ रहा यूथ में ट्रेंड। इतने में भी 'भास्कर पत्रकारों' का दिल नहीं भरा, इन्होंने 'दैनिक भास्कर' के शीर्षक भी प्राय: अंग्रेजी शब्दों में बनाये हैं। जैसे- 'लर्निंग मैनेजमेंट', 'वैल्यू मैनेजमेंट', 'मंडे पोजिटिव', विहेवियर मैनेजमेंट।

हिन्दी विकास के नाम पर हिन्दी को ही समाप्त करने का लक्ष्य लिए हुए 'दैनिक भास्कर' ने इससे भी आगे बढ़कर उप-शीर्षकों के नाम आधे रोमन में और आधे देवनागरी में तथा अनेक जगह केवल रोमन लिपि में भी देने की महती कुनीति अपना रखी है। जरा देखिए- इंटर्न SHIP, कोर्स Review, मेलों का आगाज @germany तथा पूरे वाक्य अंग्रेजी में- Harvard Business Review, Case Study & Tips, Buddha Said, आदि की भरमार है।

भास्कर के संचालक मण्डल ने अपने संवाददाताओं और सम्पादकों को यह कठोर आदेश दिए हुए हैं कि वे सभी प्रकार के समाचारों में अंग्रेजी शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग करें। अनेक बुद्धिजीवियों, भाषाविदों, शिक्षाशास्त्रियों, वरिष्ठ प्रतिष्ठित पत्रकारों ने भास्कर के संचालन मण्डल को बार-बार निवेदन कियाकि वे भास्कर समाचार पत्र में हिन्दी शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग करें, लेकिन उन्होंने इस पर ध्याननहीं दिया, बल्कि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग और बढ़ा दिया। 13 हिन्दीसेवी संगठनों ने बैठक कर भास्कर की कुचाल

पर विचार कर एक सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर पिछले वर्षों भास्कर के भोपाल स्थित मुख्यालय को भेजा, लेकिन वहाँ से उत्तर आया कि- ''हम अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करके हिन्दी का विकास कर रहे हैं। सरल और व्यावहारिक भाषा का प्रयोग कर हिन्दी को बढ़ा रहे हैं।''

यह ठीक है कि 'दैनिक भास्कर' कुछ अच्छे सकारात्मक संघर्षमय जीवनियाँ, पक्षियों को दाना-पानी, पानी बचाओ, गरीबों के लिए सर्दियों में वस्त्र संग्रह आदि अभियान चलाता है, इसके लिए भासकर का धन्यवाद है, समाज उसका आभारी है, लेकिन राष्ट्रभाषा का अपमान असह्य है।

1. भास्कर एक हिन्दी दैनिक समाचार पत्र है। इसे शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए भी कोई अभियान चलाना चाहिए। अपने समाचारों व सब प्रकार के विज्ञापनों, संपर्कों में शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। भास्कर में कार्यरत सभी कर्मचारियों, अधिकारियों, सम्पादकों आदि के लिए अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी प्रयोग की अनिवार्यता रखनी चाहिए। समाचार पत्र समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत व शिक्षक भी होता है। इसीलिए उसे समाज का चौथा स्तम्भ कहा गया है, जिसे भास्कर नहीं निभा रहा है।

2. भास्कर द्वारा किये जाने वाले नृत्य जलसों तथा समाचारों में अश्लीलता नहीं होनी चाहिए। अभिनेता व अभिनेत्रियों के अश्लील चित्र बन्द होने चाहिएं। पैसा कमाओ लेकिन मानवता से गिरकर नहीं।

3. भाषा विज्ञान के अनुसार भाषाएं स्वाभाविकरूप से विकसित होती रहती हैं। हिन्दी ने अन्य भाषाओं के शब्दों को सर्वाधिक अपने अन्दर समाहित किया है, लेकिन जाबूझकर षड्यन्त्र के तहत हिन्दी को विकृत करना राष्ट्रभाषा के प्रति घोर अपराध है। भास्कर को शायद यह भ्रान्ति है कि अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से समाचार पत्र की लोकप्रियता बढ़ती है। इससे तो मानसिक दास्ता ही प्रकट होती है। हानि के सिवाय लाभ कोई नहीं होता।

राष्ट्रभाषा को विकृत करना राष्ट्र के प्रति घोर अपराध है। यदि 'दैनिक भास्कर' को अंग्रेजी से प्रेम है तो उसे अंग्रेजी समाचार पत्र निकालना चाहिये। हिन्दी को हथियार बनाकर हिन्दी को ही काटना सहन नहीं हो सकता है।

अब हम भास्कर को कोई निवेदन नहीं करेंगे, अपितु हम देश के नागरिकों से यह पुरजोर निवेदन करते हैं कि वे दैनिक भास्कर जैसे हिन्दी को विकृत करने वाले समाचार पत्र को न खरीदें। अन्य किसी भी समाचार-पत्र को खरीदें। दैनिक भास्कर का पूर्णत: बहिष्कार करें।

हम देश के सूचना व संचार मंत्री तथा राष्ट्रभाषा मंत्रालय से भी निवदेन करते हैं कि वे राष्ट्रभाषा के विकृत करने के बारे में 'दैनिक भास्कर' के षड्यन्त्र के विरुद्ध जांच करें तथा इसका पंजीकरण रद्द करे।

(लेख का उत्तरदायी स्वयं लेखक है)

- महावीर शास्त्री धीर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- 2018 दिल्ली हेतु आमन्त्रण

आप सभी को अवगत है कि "**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**" के संयुक्त तत्वावधान में "**अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन**" का आयोजन दिल्ली में दिनांक **25-26-27 एवं 28 अक्तूबर, 2018 तक** किया जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की परम्परा का आरम्भ वर्ष 1927 में दिल्ली से हुआ था। तब से आर्यों के विशाल संगठन के ये आयोजन देश-विदेश में होते रहे। वर्ष 2006 के दिल्ली महासम्मेलन में लिए गए संकल्प के आलोक में इन महासम्मेलनों की शृंखला विदेशों में पुन: आरम्भ हुई और तब से लेकर अब तक **अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, हॉलैण्ड, दिल्ली, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर-थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल एवं बर्मा** में आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए हैं। अब यह महासम्मेलन पुन: दिल्ली में आयोजित हो रहा है। देश-विदेश में इसकी तैयारियां आरम्भ हो चुकी हैं।

हमारा सौभाग्य है कि आर्यसमाज के संस्थापक और 19वीं सदी के महान् उन्नायक, वेदोद्धारक, महर्षि देव दयानन्द जी सरस्वती के जन्म के 200 वर्ष 2024 में पूर्ण हो रहे हैं। वर्ष 2018 से 2024 तक सार्वदेशिक सभा द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्विशताब्दी जन्म समारोहों के आयोजनों का प्रारम्भ भी इस महासम्मेलन के साथ-साथ किया जाएगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज की वर्तमान स्थितियों, विश्व के तेजी से बदलते परिवेश तथा तकनीकी परिवर्तनों से पूर्णतया अवगत है तथा उसी के अनुरूप आर्यसमाज की वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनेक विशेष योजनाओं का निर्माण भी किया गया है। इस महासम्मेलन में विश्व के कोने-कोने से पधारे महानुभाव उन सब नए कार्यक्रमों और योजनाओं की सही जानकारी भी ले सकेंगे तथा अपने क्षेत्र में कार्य बढ़ाने के लिए उनका उपयोग भी कर सकेंगे। कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि आर्यसमाज को एक नए युग की ओर ले जाने के लिए सन् 2006 में विश्व में फैले इस संगठन की यही स्थितियों का अनुमान सार्वदेशिक सभा को उतना अधिक नहीं था जितना कि गत 10 वर्षों में हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों के सफर के पश्चात् आज है। आज यह अहसास हो रहा है कि हमारे पूर्वजों ने कितनी शक्ति लगाकर दुर्गम परिस्थितियों में इन देशों में आर्यसमाज की नींव डाली थी। उनको स्थिर रखना और आगे बढ़ाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

सम्मेलन के प्रचार-प्रचार एवं जन साधारण में जागृति हेतु आर्यसमाज की प्रत्येक पत्र-पत्रिका के सम्पादकों की एक गोष्ठी एवं सम्मेलन भी आयोजित होगा। अत: अधिक से अधिक संख्या में पधार कर सम्मेलन को सफल बनायें, यही निवेदन है।

– निवेदक –

(महाशय धर्मपाल)	**(सुरेशचन्द्र आर्य)**	**(प्रकाश आर्य)**	**(धर्मपाल आर्य)**
अध्यक्ष	प्रधान, सार्वदेशिक सभा	मन्त्री सार्वदेशिक सभा	महासम्मेलन संयोजक
स्वागत समिति	09824072509	09826655117	09810061763

तृतीय आर्यवेदप्रचार यात्रा सम्पन्न

हरयाणा के प्रत्येक जिले में आयोजित की जा रही आर्य वेदप्रचार यात्रा कार्यक्रम के अन्तर्गत तृतीय वेदप्रचार यात्रा 1 अक्टूबर से 9 अक्टूबर 2018 तक जिला जींद के ग्रामों में आयोजित की गई। यह प्रचार यात्रा गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल योगार्थी के नेतृत्व में की गई। इस यात्रा में 28 ग्रामों को चुना गया था, उन ग्रामों की सूची इस प्रकार है- आसन, धड़ौली, सिवाहा, कलावती, भुराण, कालवा, भागखेड़ा, गांगोली, खरक गागर, मोरखी, भंभेवा, मालसरी खेड़ा, ढाठरथ स्कूल, ढाठरथ गांव, तलौड़ा, एम.डी. स्कूल बाघडू खुर्द, बाघडू खुर्द गांव, रामनगर, रा.व.मा.वि. सींक, पाथरी, बुढ़ाखेड़ा, पिल्लुखेड़ा गांव, निडानी, गुसांई खेड़ा, किनाना, घिमाणा, बहबलपुर, बीबीपुर।

इस प्रचार यात्रा में यज्ञ से पूर्व सभी भागीदारों को यज्ञोपवीत दिया गया, उसके लाभ बताकर यज्ञ का आयोजन हुआ। लोगों को दैनिक यज्ञ करने की प्रेरणा दी गई। स्कूलों के छात्र-छात्राओं को माता-पिता-गुरु की सेवा करने की प्रतिज्ञा कराई। आसन, व्यायाम, प्राणायाम तथा ब्रह्मचर्य पालन हेतु उपदेश दिया। गाय का महत्त्व बताकर इसके दूध-घी के सेवन का लाभ बताया। इस उपदेश माला में स्वामी कर्मपालजी, (गुलकणी) प्रो० ओमकुमार जी जींद, सत्यवीर जी शास्त्री रोहतक, दलजीत जी आर्य बालन्द, ब्र० अग्निदेव जी गुरुकुल कालवा, प्रसिद्ध भजनोपदेशक रामनिवास आर्य तथा कुलदीप आर्य ने श्रोताओं को सम्बोधित किया।

इस प्रचार कार्यक्रम में सर्वश्री जयनारायण, सूरजभान गांगोली, आनन्दमुनि, धर्ममुनि, यज्ञमुनि, कर्मवीर आर्य भागखेड़ा, जयपाल आर्य भुराण, श्रीमती दीप्ति आर्या प्राचार्या सींक स्कूल, रामकुमार आर्य बाघडू खुर्द, रणवीर आर्य बहबलपुर, जयदेव रेहडू-एम.डी. स्कूल बाघडू, यशपाल रेहडू सत्यवीर आर्य पाथरी, मा० सुभाषचन्द्र भारद्वाज ढाठरथ, कपूरसिंह गुसाई खेड़ा आदि महानुभावों ने पूरा सहयोग किया। एतदर्थ इन सभी का हार्दिक धन्यवाद है।

वेदप्रचार समिति हरयाणा एवं जिला जींद के तत्त्वावधान में यह कार्यक्रम ईश कृपा से सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम का इतना व्यापक प्रभाव हो रहा है कि शेष जिलों से भी वेदप्रचार हेतु मांग आ रही है। हम यत्न कर रहे हैं कि उन सभी सज्जनों के हृदय की भावनाओं का पूरा ध्यान रखा जायेगा। ईश्वर की कृपा से यह कार्यक्रम जैसे अभी तक सम्पन्न हुआ है वैसे ही भविष्य में भी होता रहेगा।

-निवेदक
आचार्य विजयपाल योगार्थी
मो० - 9416055044

तृतीय आर्यवेदप्रचार यात्रा जिला जींद की चित्रावली

रा.उ.मा.वि. भागखेड़ा

गांव मालसरी खेड़ा

एम.डी. स्कूल बाघडू खुर्द

रा.उ.मा.वि. सींख

गांव भंभेवा

गांव तलौडा

गांव बाघडू खुर्द

रा.उ.मा.वि. मोरखी

तृतीय आर्यवेदप्रचार यात्रा जिला जींद की चित्रावली

गांव ढाठरथ

गांव बूढाखेड़ा

गांव किनाना

गांव बीबीपुर

गांव पाथरी

गांव रा.उ.मा.वि. निडाणी

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

_____ _____

डा० _____ _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।